

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 16

प्रकाशितवाक्य 11 मंदिर और दो गवाह

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह प्रकाशितवाक्य 11, मंदिर और दो गवाहों पर सत्र 16 है।

प्रकाशितवाक्य 11 में, हमने कहा कि दो अलग-अलग छवियां हैं जिनका लेखक उपयोग करता है, और सवाल यह है कि वे छवियां क्या चित्रित करती हैं और वे क्या संदर्भित करती हैं और दोनों छवियों के बीच क्या संबंध है।

पहला जो हमने पेश किया वह एक मंदिर की छवि थी और एक मंदिर जिसे जॉन को अध्याय 11 के पहले दो छंदों में मापने के लिए कहा गया है। और फिर अध्याय 11 के बाकी हिस्सों में दो गवाहों के विवरण का वर्चस्व है जो बाहर जाते हैं और गवाह, और दिन के अंत में, एक जानवर रसातल से बाहर आता है, उन्हें मौत के घाट उतार देता है, और उसके बाद, उन्हें उठाया जाता है और सही ठहराया जाता है। अध्याय 11 अंततः सातवीं तुरही फूंकने के साथ समाप्त होता है, जिसे अध्याय 9 में छठी तुरही से तोड़ दिया गया था। अब, मैं जो करना चाहता हूं वह उन दो छवियों को थोड़ा और विस्तार से देखना है।

प्रकाशितवाक्य 11, श्लोक 1 और 2 में, हमें पहली छवि से परिचित कराया जाता है, जो एक मंदिर की छवि या प्रतीक है। फिर, सोचने लायक पहला सवाल यह पूछना है कि इसका क्या मतलब हो सकता है, जो कोई सवाल नहीं है बल्कि महसूस करने वाला पहला सिद्धांत है। प्रारंभिक बिंदु यह समझना है कि यह संभवतः किसी चीज़ का प्रतीक है जैसा कि हमने बार-बार देखा है, जो कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक में मामला है।

तो सवाल यह है कि यह मंदिर किसका प्रतीक है? यह क्या संकेत दे रहा है? क्या यह किसी वास्तविक मंदिर या किसी प्रकार की भौतिक संरचना या क्या की बात कर रहा है? इसे समझने के लिए कई विकल्प मौजूद हैं। प्रारंभिक बिंदु यह महसूस करना है कि जॉन संभवतः एक मंदिर को मापने की छवि में पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर चित्रण कर रहा है। उदाहरण के लिए, ईजेकील अध्याय 40 से 48 तक, जो एक महत्वपूर्ण पाठ है जो बाद में प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में जॉन के स्वयं के दृष्टिकोण को प्रभावित करेगा, जहां जॉन को नए यरूशलेम स्लैश मंदिर का एक दर्शन मिलता है।

जैसा कि हम देखेंगे, मंदिर की कल्पना यरूशलेम शहर पर लागू होती है, और उस शहर को मापा जाता है। ईजेकील 40 से 48 तक इसकी प्रेरणा और इसका प्रभाव है, जहां लेखक या द्रष्टा ईजेकील को एक दौरे पर ले जाया जाता है और वह वास्तव में इसे मंदिर को मापते हुए देखता है। और इसलिए यह यहां फिट होगा, जहां जॉन को अब पढ़ने को दिया गया है और भगवान के मंदिर को मापने के लिए कहा गया है।

दूसरा पाठ जो संभवतः यहां चल रही घटनाओं को प्रभावित करता है, वह जकर्याह अध्याय 2, 1 से 5 है, जहां जकर्याह को मापने का पाठ भी दिया गया है और उसे यरूशलेम को मापने के लिए कहा गया है। तो यहां जॉन की कल्पना जकर्याह 2 से ईजेकील की सर्वनाशकारी दूरदर्शी-प्रकार की सामग्री पर आधारित है, और अब जॉन को इस मंदिर को मापने के लिए कहा गया है। तो सवाल ये उठता है कि आखिर ये मंदिर है क्या? कई सुझाव आए हैं, और रहस्योद्घाटन की व्याख्या के अन्य मुद्दों की तरह, मैं उन सभी का सर्वेक्षण नहीं करना चाहता।

लेकिन सबसे पहले, एक आम विकल्प यह रहा है कि यह शाब्दिक रूप से अंतिम समय के पुनर्निर्मित मंदिर का संदर्भ है, जो अक्सर प्रकाशितवाक्य के उस दृष्टिकोण से जुड़ा होता है जो अध्याय 4 से 22 तक देखता है, इसकी संपूर्णता अभी भी भविष्य में है, भविष्य के अंत का जिक्र है -समय परिदृश्य जो इतिहास के बिल्कुल अंत तक घटित होता है, और उसके बाद यीशु मसीह के दूसरे आगमन के आसपास की घटनाओं को भी शामिल करता है। इसका एक हिस्सा अध्याय 11 को पढ़ना होगा, जो ईजेकील 40 से 48 जैसे ग्रंथों की पूर्ति में एक वास्तविक पुनर्निर्मित मंदिर की भविष्यवाणी करता है। इसकी एक और आम समझ यह है कि यह मंदिर को संदर्भित करता है, पहली शताब्दी में शाब्दिक मंदिर जो बाद में था 70 ई. में नष्ट कर दिया गया।

तो यह दृष्टिकोण रहस्योद्घाटन के दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ है जहां अध्याय 4 से 22 में लगभग सभी रहस्योद्घाटन, सभी घटनाएं वर्णन करती हैं कि पहली शताब्दी में पहले से ही क्या चल रहा था, केवल पहली शताब्दी का दृष्टिकोण जिसे प्रीटरिस्ट दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। हमने पहले इसके बारे में थोड़ी बात की थी। और इसलिए यहां जिस मंदिर का वर्णन किया जा रहा है वह वास्तव में 70 ईस्वी में नष्ट होने से पहले पहली शताब्दी ईस्वी में खड़ा शाब्दिक भौतिक मंदिर है।

और वह दृश्य प्रकाशितवाक्य के उस दृष्टिकोण से जुड़ा है जो वास्तव में लगभग 60 के दशक के मध्य में लिखा गया था। यहाँ के मंदिर का एक अन्य दृश्य इसे अधिक आलंकारिक रूप से लेना है; अर्थात्, यहाँ का मंदिर भगवान के लोगों का प्रतीक है, लेकिन यह अभी भी भविष्य के मंदिर का संदर्भ है जो कि भगवान के भविष्य के लोग हैं, मंदिर की कल्पना को आलंकारिक रूप से या प्रतीकात्मक रूप से स्वयं भगवान के लोगों का संदर्भ देते हुए। एक अन्य दृष्टिकोण, चौथा दृष्टिकोण जो मैं स्वीकार करूंगा वह यह है कि यहां का मंदिर वास्तव में भगवान के लोगों के चर्च के लिए एक रूपक है, लेकिन शायद केवल पहली शताब्दी ईस्वी का जिक्र नहीं है, विशेष रूप से भविष्य के मंदिर का जिक्र नहीं है, लेकिन शायद बस पहली शताब्दी ईस्वी में शुरू होने वाले चर्च को संदर्भित करता है, लेकिन चर्च अपने अस्तित्व में ईसा मसीह के दूसरे आगमन तक या ईसा मसीह के पूर्ण इतिहास में वापस आने तक अस्तित्व में था, जो बाद में अध्याय 11 में सातवीं मुहर पर होता है।

इसलिए मैं यहां मंदिर को भगवान के लोगों के रूपक के रूप में लेता हूँ, या पूरे रहस्योद्घाटन में, यह भगवान के लोग होंगे, भगवान के नए लोग होंगे, चर्च में यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल होंगे। दूसरे शब्दों में, हमने बार-बार देखा है कि जॉन अक्सर इज़राइल का संदर्भ देते हुए पुराने नियम की कल्पना का उपयोग करते थे और अब इसे भगवान के नए लोगों, चर्च पर लागू करते

हैं। नए नियम में अन्यत्र, हमने देखा है कि नए नियम के लेखक पुराने नियम से मंदिर की कल्पना ले सकते हैं और अब इसे भगवान के नए लोगों पर लागू कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, पॉल कह सकता है कि चर्च है, और वह 1 कुरिन्थियों 3 में अपने पाठकों को संबोधित कर सकता है, जैसे कि आप मंदिर हैं। क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो? इफिसियों अध्याय 2 में, श्लोक 20 और 22 में, वह चर्च को प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर बने मंदिर के रूप में वर्णित करता है, यीशु मंदिर की आधारशिला है, और मंदिर एक पवित्र आवास बनने के लिए बढ़ रहा है जहां भगवान रहते हैं उसकी पवित्र आत्मा पुराने नियम की मंदिर भाषा का उपयोग कर रही है। और यहां तक कि प्रकाशितवाक्य के अध्याय 3 के श्लोक 12 में एक चर्च से, जॉन ने वादा किया कि यदि वे जीत गए, तो वे भगवान के मंदिर में एक स्तंभ बन जाएंगे। इसलिए, न केवल नए नियम में, बल्कि प्रकाशितवाक्य में भी, जॉन ने पुराने नियम से मंदिर की कल्पना और भौतिक मंदिर की कल्पना ली है और अब इसे चर्च में या स्वयं भगवान के लोगों में पूरा होता हुआ पाता है।

तो मैं यह मानता हूँ कि यहां अध्याय 11, श्लोक एक और दो में मंदिर, किसी शाब्दिक मंदिर का जिक्र नहीं कर रहा है, या तो पहली शताब्दी में, वह मंदिर जो खड़ा होगा, या भविष्य में किसी शाब्दिक पुनर्निर्माण मंदिर का जिक्र नहीं कर रहा है, बल्कि इसे प्रतीकात्मक रूप से भगवान के लोगों के मंदिर, भगवान के निवास स्थान के संदर्भ के रूप में समझा जाना चाहिए। और यहाँ यह संभवतः पहली सदी में शुरू हुए अपने अस्तित्व में भगवान के लोगों को एक मंदिर के रूप में संदर्भित करता है, जो जॉन के अपने पाठकों का जिक्र करता है, लेकिन समय की पूरी अवधि तक, ईसा मसीह के दूसरे आगमन तक ले जाता है, जब भी वह इतिहास को पूर्ण करने के लिए आता है। दिलचस्प बात यह है कि जॉन के लिए यह कोई नई बात नहीं है।

उदाहरण के लिए, कुमरान समुदाय और मृत सागर स्क्रॉल अक्सर पुराने नियम की अस्थायी कल्पना लेते थे और इसे अपने समुदाय पर लागू करते थे। वे अपने समुदाय को भगवान के मंदिर के रूप में देखते थे। उन्होंने अपने स्वयं के व्यक्तिगत सदस्यों को मंदिर के निर्माण के पत्थरों के रूप में देखा।

फिर भी मुख्य अंतर यह था कि कुमरान समुदाय खुद को देखता था; मृत सागर के किनारे का वह समुदाय खुद को भगवान के मंदिर के रूप में देखता था क्योंकि उन्हें लगता था कि यरूशलेम मंदिर धर्मत्यागी था और दुष्ट था और सच्चा मंदिर नहीं था। लेकिन कुमरान समुदाय को भी भविष्य में किसी दिन मंदिर के पुनर्निर्माण की उम्मीद थी। जहाँ जॉन सुझाव देते प्रतीत होते हैं कि समुदाय ईश्वर का मंदिर है, इसका कारण यह है कि यीशु मसीह स्वयं सच्चा मंदिर हैं।

यीशु मसीह ही परमेश्वर के मंदिर की सच्ची पूर्ति हैं, और इसलिए, जो लोग मसीह के हैं वे भी मंदिर का निर्माण करते हैं। और इसलिए हम देखेंगे जब हम अध्याय 21 पर पहुंचेंगे, जॉन को कोई मंदिर नहीं दिखता है, इसलिए नहीं कि उसने सोचा था कि मूल मंदिर बुरा था, बल्कि जॉन को नए यरूशलेम में कोई भौतिक मंदिर नहीं दिखता है क्योंकि मेम्ना ही मंदिर है और परमेश्वर की सारी प्रजा स्वयं भी मन्दिर है। तो अब जॉन परमेश्वर के लोगों को एक मंदिर के रूप में देखता

है, और उसे उन्हें मापने के लिए कहा गया है, सिवाय दिलचस्प बात के, यहाँ उसे केवल मंदिर के एक हिस्से को मापने के लिए कहा गया है।

जिस हिस्से को वह अदालत, बाहरी अदालत कहता है, उसे मापा नहीं जाएगा और इसके बजाय 42 महीने की अवधि के लिए रौंदने के लिए अन्यजातियों को सौंप दिया जाएगा। और सवाल यह है कि यह माप किस बारे में है? उन्हें मंदिर को मापने के लिए क्यों कहा जाता है? और फिर दूसरा, मंदिर के हिस्से को क्यों नहीं मापा गया और 42 महीनों तक रौंदने के लिए अन्यजातियों को क्यों नहीं फेंक दिया गया? सबसे पहले, यहां मापने का कार्य स्वामित्व और सुरक्षा का सुझाव और संकेत देता प्रतीत होता है। तो तथ्य यह है कि जकर्याह अध्याय 2 में जैसा मिलता है, उदाहरण के लिए, मापने का कार्य।

इसलिए मंदिर की माप, भगवान के लोगों का प्रतीक मंदिर, भगवान के लोगों की सुरक्षा और संरक्षण का सुझाव देता है। इस दौरान, इन मुहरों और इन तुरहियों में जो कुछ हो रहा है वह यह है कि अब भगवान के लोग सुरक्षित और संरक्षित हैं। ध्यान दें कि वह न केवल मंदिर, बल्कि वेदी और उसमें पूजा करने वालों को भी मापता है।

संभवतः, हमें इसे बहुत शाब्दिक रूप से नहीं लेना चाहिए जैसे कि तीन अलग-अलग चीजें हैं। वहाँ एक मंदिर है, और फिर वहाँ एक वेदी है, और फिर उसमें पूजा करने वाले लोग, या ये चर्च के भीतर तीन अलग-अलग प्रकार के विश्वासी या लोग हैं। लेकिन फिर, लेखक केवल मंदिर और वेदी और उसमें पूजा करने वालों के विस्तृत विवरण का उपयोग कर रहा है।

कुल मिलाकर, इसका मतलब मंदिर के भीतर अलग-अलग तत्वों को चित्रित करना नहीं है, बल्कि कुल मिलाकर, यह एक मंदिर के रूप में भगवान के लोगों का प्रतीक है जिन्हें अब मापा जाता है, जो उनके संरक्षण और उनकी सुरक्षा को दर्शाता है। अब सवाल यह है कि मंदिर के वेदी प्रांगण को बाहर क्यों रखा गया है? जाहिरा तौर पर इसे मापा और संरक्षित नहीं किया गया है, लेकिन अब इसे बाहर फेंक दिया गया है और यह राष्ट्रों के अधीन है और रौंदा जाने वाला है। दो संभावित स्पष्टीकरण.

उनमें से एक यह है कि वेदी कोर्ट जिसे मापा नहीं गया है, चर्च के बेवफा सदस्यों का प्रतीक है। अध्याय दो और तीन को याद करें, केवल दो चर्च ही वफ़ादार थे और इस वजह से उत्पीड़न सह रहे थे। अधिकांश चर्च समझौता करने पर इतने आमादा थे और एक चर्च इतना आत्मसंतुष्ट था कि उनमें से कई को बहुत नकारात्मक मूल्यांकन मिला।

कुछ चर्चों में कुछ ऐसे थे जो वफ़ादार थे लेकिन कुछ ऐसे थे जो नहीं थे और जो उन शिक्षकों को बर्दाश्त कर रहे थे जो कह रहे थे कि समझौता करना ठीक है। तो, एक संभावना यह है कि मंदिर के जिस हिस्से को मापा और संरक्षित किया गया है वह अध्याय दो से वफ़ादार चर्च और अध्याय दो और तीन से चर्च के वफ़ादार सदस्य होंगे। मंदिर का जो हिस्सा बाहर फेंका गया है वह चर्च के बेवफा, समझौता करने वाले सदस्यों का प्रतिनिधित्व करेगा।

एक अन्य संभावना जो मुझे लगता है कि अध्याय 11 के शेष भाग में हम जो देखते हैं और जो हमने अब तक देखा है, उसके साथ थोड़ा बेहतर फिट हो सकता है, वह यह है कि मंदिर के हिस्से की माप, लेकिन वेदी कोर्ट को छोड़कर, यह सुझाव देगी कि यह क्या चर्च को दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा जाता है। वह मन्दिर की माप है, मन्दिर का हृदय, परमपवित्र स्थान, और परमेश्वर का निवास स्थान, जहाँ वेदी है। यह इंगित करता है कि चर्च आध्यात्मिक रूप से संरक्षित है, जिसे ईश्वर द्वारा रखा और संरक्षित किया गया है, जबकि अभी भी राष्ट्रों और रोमन साम्राज्य के हाथों उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है।

तो, यह तथ्य कि मंदिर का एक हिस्सा संरक्षित और संरक्षित है, चर्च को इंगित करता है क्योंकि यह भगवान द्वारा संरक्षित और आध्यात्मिक रूप से संरक्षित है, लेकिन यह तथ्य कि इसके एक हिस्से को रौंदने के लिए बाहर फेंक दिया गया है, चर्च को इस दृष्टिकोण से देखना होगा कि यह फिर भी सताया जाएगा। यह अभी भी राष्ट्र के हाथों और रोमन साम्राज्य के हाथों पीड़ा और उत्पीड़न का शिकार होगा, उनमें से कुछ की मृत्यु तक हो जाएगी। फिर से, मेरे दिमाग में, यह रहस्योद्घाटन के बाकी हिस्सों के प्रकाश में समझ में आता है, जहां संतों को चित्रित किया गया है।

उदाहरण के लिए, अध्याय 7 में, उन्हें ईश्वर द्वारा मुहरबंद और संरक्षित के रूप में चित्रित किया गया है, फिर भी उन्हें अभी भी सताया जाता है। आगे आने वाले अध्याय 12 और 13 में, हम चर्च की वही छवि देखेंगे जिसे संरक्षित किया जा रहा है फिर भी वह शैतान के हाथों, जानवर के हाथों और रोमन साम्राज्य के हाथों उत्पीड़न का शिकार है। अब, वह समय जिसमें चर्च को उत्पीड़न सहने की अनुमति दी जाती है, जिसका प्रतीक शायद बाहरी अदालत को मापा नहीं जा रहा है और राष्ट्रों द्वारा रौंदा जा रहा है, 42 महीने की अवधि है।

यदि आप गणित करते हैं, तो आपको पता चलता है कि 42 महीने साढ़े तीन साल कहने का एक और तरीका है, वह समय, समय और आधा समय जो डैनियल की किताब से आता है जिसे आप प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 और श्लोक 14 में पाते हैं। आप डैनियल में समय, समय और आधे समय की भाषा पाते हैं, उदाहरण के लिए, डैनियल के अध्याय 7 और पद 25, अध्याय 9 और पद 27, और अध्याय 12 और पद 7। और आप स्वयं उन पाठों को देख सकते हैं, लेकिन संभवतः यहीं से जॉन को साढ़े तीन साल या शाब्दिक रूप से समय, समय और फिर आधा समय, साढ़े तीन साल की धारणा मिलती है।

उम्मीद है, अब तक, आपको यह पता चल गया होगा कि इन 42 महीनों को, अन्य संख्याओं की तरह, जिन्हें हमने रहस्योद्घाटन और अन्य अस्थायी पदनामों में देखा है, को सख्त शाब्दिकता के साथ नहीं लिया जाना चाहिए। यह समय की कोई शाब्दिक अवधि नहीं है जिसे कैलेंडर पर गिना जाए ताकि आप प्रत्येक दिन को चिह्नित कर सकें जब तक कि आप ठीक 42 महीने तक न पहुंच जाएं। और जैसा कि हमने कहा, 42 महीने लगभग साढ़े तीन साल के बराबर होते हैं।

इसके बजाय, फिर से, लेखक द्वारा संख्या 42 का उपयोग इतना शाब्दिक नहीं है जितना कि उस समय के चरित्र और अर्थ को इंगित और व्याख्या करना है जिसके दौरान चर्च को उत्पीड़न सहना पड़ेगा। और मैं आपको सुझाव देता हूँ कि हम बस एक क्षण में देखेंगे कि संभवतः 42 महीने चर्च

के संपूर्ण अस्तित्व को फैलाने के लिए हैं। इसलिए पहली शताब्दी में ही, चर्चों को इस 42 महीने की अवधि में स्वयं को समझना था।

लेकिन विचार यह नहीं है कि 42 महीनों के बाद, उनका काम पूरा हो जाएगा। लेकिन 42 महीने, शाब्दिक रूप से नहीं, बल्कि अन्य संख्याओं की तरह प्रतीकात्मक रूप से, मसीह के वापस आने तक चर्च के अस्तित्व के चरित्र की व्याख्या और वर्णन करने के लिए हैं। अब, जॉन को 40 नंबर कहाँ से मिला? पुराने नियम में संख्या 40 एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उदाहरण के लिए, एलिय्याह का मंत्रालय। और बाद में, हम देखेंगे कि अध्याय 11 के शेष भाग में एलिय्याह दो गवाहों में से एक की पहचान के रूप में भूमिका निभाता हुआ प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए, 1 राजा 17 और 18 में एलिय्याह का मंत्रालय, विशेष रूप से बाद में नए नियम में।

उदाहरण के लिए, जेम्स 5.17 पढ़ें, जहां एलिय्याह को साढ़े तीन साल में से एक के रूप में देखा जाता है। लेकिन संख्या 33 में भी, हम पाते हैं कि जंगल में इज़राइल का भटकना संख्या 33 में 40 छावनियों में हुआ था। इससे पता चलता है कि 40 निर्णय और परीक्षण दोनों के विचार को इंगित करेगा।

तो, 42 महीने संकेत देंगे कि चर्च का अब परीक्षण किया जा रहा है। यह परीक्षण के समय में है। लेकिन प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12, श्लोक 14 में, हम यह भी देखेंगे कि संख्या 40 संरक्षण का भी सुझाव देती है।

तो संख्या 42 जो कह रही है वह विशेष रूप से पुराने नियम के ग्रंथों को याद करके है, और जिस तरह से प्रकाशितवाक्य इसका उपयोग करता है वह 42 है, तो समय की शाब्दिक अवधि का एक पदनाम होने के बजाय, चर्च के अस्तित्व के चरित्र की व्याख्या करना है संरक्षण, फिर भी परीक्षण में से एक, यहाँ तक कि परमेश्वर के लोगों पर न्याय भी। तो जॉन ने मंदिर को मापने की इस छवि के द्वारा हमें चर्च के अस्तित्व की प्रकृति के बारे में कुछ बताया है। भगवान के मंदिर के रूप में, भगवान के निवास के रूप में, उस स्थान के रूप में जहां भगवान अपने लोगों के साथ रहते हैं, दुनिया में एक मंदिर के रूप में, चर्च को संरक्षित किया जाएगा।

फिर भी, साथ ही, इसे रोम के हाथों और दुनिया के हाथों उत्पीड़न से पीड़ित होना पड़ेगा। इसलिए, चर्च के अस्तित्व का चरित्र संरक्षण का समय है, फिर भी यह परीक्षण और पीड़ा का भी है। अगली छवि, श्लोक 3 से शुरू होकर, अगली छवि है जिसे जॉन खींचता है, फिर दो गवाह हैं।

और हम फिर से सवाल पूछना चाहते हैं कि ये दोनों गवाह कौन हैं? और वे क्या करते हैं? और वे ऐसा कब करते हैं? सबसे पहले, पद 3 में, हमें बताया गया है कि वे 1260 दिनों तक गवाही देते हैं। यह संभवतः डैनियल के अध्याय 12, श्लोक 11 में डैनियल के 1290 दिनों पर आधारित है या उसका एक संस्करण है। और फिर जॉन की संख्या 1260 30 महीने, वास्तव में 30 दिन महीने का अधिक सामान्य प्रतिपादन दर्शा सकती है।

लेकिन 1260 दिन फिर से लगभग 42 महीने या साढ़े तीन साल के बराबर है। तो जॉन इन नंबरों का उपयोग करता है, मुझे लगता है, परस्पर विनिमय के रूप में, साढ़े तीन साल, 42 महीने, या 1260 दिन, यह इस पर निर्भर करता है कि वह क्या कहना चाहता है या इस पर निर्भर करता है कि वह चर्च के अस्तित्व की अवधि को कैसे चित्रित करना चाहता है। तो, दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि 1260 दिन, 42 महीने, और साढ़े तीन साल सभी बिल्कुल उसी समयावधि को संदर्भित करने के प्रतीकात्मक तरीके हैं।

चर्च का अस्तित्व पहली शताब्दी में शुरू हुआ और ईसा मसीह के दूसरे आगमन तक चला। और, निःसंदेह, जॉन को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि यह 2000 वर्षों तक चलता रहेगा। वह बस चर्च के अस्तित्व को मसीह के वापस आने तक परीक्षण और संरक्षण के रूप में समझता है।

अब, मेरी राय में, ऐसा कोई संकेत नहीं है कि जॉन का इरादा है कि हम इनमें से किसी भी संख्या को जोड़कर सात साल की क्लेश की अवधि तय करें। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के कुछ धार्मिक निर्माणों में, या कुछ धार्मिक खंडों में, प्रकाशितवाक्य को क्लेश की सात साल की अवधि को चित्रित करने के रूप में पढ़ा जाता है। वह डेनियल के 70वें सप्ताह से जुड़कर नंबर एक पर पहुंच गया।

और मैं उस सब में नहीं जाना चाहता. मेरा मानना है कि अध्याय नौ में डेनियल की 70 सप्ताहों की चर्चा है। लेकिन साढ़े तीन साल या 42 महीने या 1260 दिन की इनमें से दो अवधियों को जोड़ने पर भी सात साल या सात साल का क्लेश आता है।

लेकिन फिर, मुझे कहीं भी कोई सबूत नहीं मिला कि जॉन का इरादा है कि हम सात साल की अवधि तक पहुंचने के लिए इनमें से किसी भी समय अवधि को जोड़ दें। इसके बजाय, जॉन बस अलग-अलग समयावधियों का उपयोग करता है या समान अवधि का वर्णन करने के लिए 42 महीने, साढ़े तीन साल, 1260 दिनों के बीच आगे-पीछे होता है। दूसरे शब्दों में, हमने कहा कि समय की अवधि चर्च का अस्तित्व है जो पहली शताब्दी में शुरू हुई और इसे समाप्त करने के लिए यीशु मसीह की वापसी तक जारी रही, जिसे हम मुहर संख्या सात में पाएंगे।

लेकिन जॉन क्या कहना चाहता है, और वह चर्च के संघर्ष और उसके अस्तित्व को कैसे चित्रित करना चाहता है, इसके आधार पर, जॉन इन विभिन्न संख्याओं का उपयोग कर सकता है। उदाहरण के तौर पर इन सभी को प्रतीकात्मक रूप से लिया जाना चाहिए। तो, सवाल यह है कि इन प्रतीकों का उपयोग करके क्या अर्थ दर्शाया गया है? तो जॉन चर्च के अस्तित्व की अवधि को साढ़े तीन साल, साढ़े तीन साल के रूप में वर्णित कर सकता है जो कुछ तीव्र है, कुछ ऐसा जो चर्च के उत्पीड़न और पीड़ा को इंगित करता है, लेकिन यह टिकेगा नहीं।

साढ़े तीन साल सात का आधा है, सात पूर्णता और पूर्णता की संख्या है। साढ़े तीन उससे बहुत कम हैं। तो, साढ़े तीन साल का मतलब यह होगा कि चर्च एक ऊबड़-खाबड़ यात्रा पर है।

यह परीक्षण का समय है. यह तीव्र उत्पीड़न है, लेकिन इसे काट दिया जाएगा. यह नहीं चलेगा.

और आप इसके बारे में सोचते हैं, समय, समय और आधे समय का विचार। समय, और फिर यह कई गुना तक बढ़ जाता है, लेकिन जैसे-जैसे चीजें आगे बढ़ती हैं, फिर केवल आधा समय, समय कट जाता है। तो, विचार यह है कि चर्च का अस्तित्व तीव्र उत्पीड़न में से एक होगा, लेकिन यह टिकेगा नहीं।

इसे काट दिया जाएगा, और यह पूर्ण संख्या सात से कम हो जाएगा। 42 महीने शब्द का उपयोग करके, जॉन पुराने नियम की पृष्ठभूमि के प्रकाश में चर्च के अस्तित्व को परीक्षण के समय के रूप में चित्रित कर सकता है, लेकिन साथ ही यह जंगल में इज़राइल के लिए सुरक्षा का समय भी था। 1260 दिनों का उपयोग करके, लेखक परीक्षण की उस अवधि को याद कर सकता है जिसका डैनियल ने स्वयं अनुमान लगाया था और अब सुझाव दे रहा है कि चर्च उस अवधि में प्रवेश कर चुका है और चर्च फिर से वही पूरा कर रहा है जो डैनियल भविष्यवाणी कर रहा था।

तो यह घटना कब घटित होती है, या 42 महीने या 1260 दिन या साढ़े तीन साल की यह अवधि कब होती है? वे चर्च की संपूर्ण अवधि के चरित्र का प्रतीकात्मक रूप से वर्णन करने के अलग-अलग तरीके हैं। फिर से, हमारे दृष्टिकोण से, हम इसे 2000 साल बाद देखते हैं, लेकिन जॉन को चर्च के संघर्ष के चरित्र और उसके अस्तित्व का वर्णन करने में अधिक रुचि थी जो कि जब भी घटित होगा, ईसा मसीह के दूसरे आगमन की ओर ले जाएगा। हालाँकि, जब हम रहस्योद्घाटन को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि हम देखेंगे कि जॉन सुझाव देते हैं कि क्लेश की यह अवधि, यह साढ़े तीन साल, 42 महीने, 1260 दिन की अवधि यीशु मसीह की मृत्यु के साथ शुरू होती है।

यीशु मसीह की स्वयं की पीड़ा और मृत्यु के बिंदु तक उनकी स्वयं की वफादार गवाही, क्लेश की इस अवधि की शुरुआत थी। और अब चर्च, अब उसके अनुयायी, पीड़ा और मृत्यु के सामने भी उसी वफादार गवाही में भाग लेते हैं। वास्तव में, इससे आगे बढ़ने के लिए, यदि कोई यह आश्चस्त होना चाहता है कि यह चर्च के बाकी इतिहास की विशेषता है, तो उसे केवल कुछ लेने की जरूरत है, जैसे कि फॉक्स की शहीदों की पुस्तक और कई अन्य यहां तक कि जो कुछ होता है उसका विवरण भी। तीसरी दुनिया के देशों में चर्च, वगैरह-वगैरह, यह देखने के लिए कि किस हद तक ईसाइयों को उनके विश्वास के लिए कष्ट सहना पड़ता है और यहाँ तक कि उन्हें सताया भी जाता है।

कुछ ऐसा जो हममें से उन लोगों के लिए आंखें खोलने वाला है जो उन जगहों पर रहते हैं जहां हम अभी भी अपने जीवन का बलिदान देने की चिंता किए बिना काफी मात्रा में धार्मिक स्वतंत्रता का आनंद लेते हैं। अब, अध्याय 11 में, श्लोक तीन से शुरू करते हुए, 42 महीने या 1260 दिन या साढ़े तीन साल की यह अवधि अब इन दो गवाहों के समय का वर्णन करने के लिए है। अध्याय दो के शेष भाग में, हमने कहा कि दो गवाहों और उनके करियर में, ऐसा कहा जा सकता है, इस अवधि के दौरान दो चरण थे।

इसका पहला भाग यह है कि दो गवाह बाहर जाते हैं और दुनिया में गवाही देने में संलग्न होते हैं। और वे ऐसा करते हुए काफ़ी हद तक सफल होते दिख रहे हैं। और इससे मेरा तात्पर्य यह है कि वे बिना किसी नुकसान या विरोध का अनुभव किए ऐसा करते हैं।

वास्तव में, पाठ हमें बताता है कि जो कोई भी उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा उसे वास्तव में गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। तो जाहिर तौर पर चर्च को प्रदर्शन करने की अनुमति है, या इन दो गवाहों को अपनी गवाही देने की अनुमति है। फिर भी दिन के अंत में, हम इसे श्लोक सात से शुरू होते हुए देखेंगे।

इसमें कहा गया है, अब जब उन्होंने गवाही पूरी कर ली है, तो एक जानवर को अथाह कुंड से बाहर आने और उन्हें मार डालने की अनुमति दी गई है। तो तीन से छह तक, वे अजेय प्रतीत होते हैं। और श्लोक सात से शुरू करके, अचानक वे असुरक्षित प्रतीत होते हैं।

एक जानवर रसातल से बाहर आता है, उन्हें मौत की सजा देता है, और पूरी दुनिया मूल रूप से एक पार्टी का आयोजन करती है क्योंकि वे खुश हैं कि इन दो गवाहों को मौत की सजा दी गई है। तो फिर मैं पूछना चाहता हूँ कि अध्याय 11 में स्पष्ट अजेयता और फिर इन दो गवाहों की असुरक्षा के साथ जो कुछ हो रहा है उसे हम कैसे समझाएं? और फिर, ये दो गवाह कौन हैं? मैं इससे शुरुआत करना चाहता हूँ कि इन दोनों गवाहों की पहचान कौन है। कौन हैं वे? अब, प्रारंभिक बिंदु यह समझना है कि ये गवाह जो भी हों या जो भी हों, उन्हें प्रतीकात्मक रूप से लिया जाना चाहिए, जैसा कि हमने अन्य सभी छवियों के साथ देखा है। अर्थात्, हालाँकि दो गवाह दो वास्तविक व्यक्तियों का उल्लेख कर सकते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि वे केवल दो गवाहों का ही उल्लेख करें।

वे और भी बहुत कुछ का उल्लेख कर सकते हैं, उसी तरह जैसे हमारे राजनीतिक कार्टूनों में, उदाहरण के लिए, अंकल सैम, और यह सबसे अच्छा उदाहरण नहीं हो सकता है, लेकिन अंकल सैम पूरी सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं, लोगों के एक पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं, एक का नहीं। एकान्त व्यक्ति। उसी तरह, ये दो गवाह सिर्फ दो से अधिक व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। संभवतः दोनों गवाहों की पृष्ठभूमि पुराने नियम में मूसा और एलिय्याह की आकृतियों में है, और अधिकांश यहूदी सर्वनाश में, उदाहरण के लिए, मूसा और हनोक के लौटने की कुछ उम्मीदें हैं।

ऐसी उम्मीद है कि मूसा और एलिजा वापस आएं। उनमें से कुछ झूठ प्रतीत होते हैं; एलिय्याह की वापसी की उम्मीद न केवल पुराने नियम के कुछ ग्रंथों के पीछे, बल्कि गॉस्पेल में जॉन द बैपटिस्ट की समझ के पीछे भी छिपी हुई प्रतीत होती है। तो, मूसा जैसे भविष्यवक्ता की अपेक्षा उत्पन्न होती है, एलिजा के आने की अपेक्षा, और पुराने नियम में यह दिलचस्प है कि वे दोनों बहुत ही असामान्य तरीकों से इस धरती से हटाए गए प्रतीत होते हैं।

अध्याय 11 के छंद 6 में, ध्यान दें कि यह कहता है, ये लोग, ये दो गवाह, आकाश को बंद करने की शक्ति रखते हैं ताकि जब वे भविष्यवाणी कर रहे हों तो बारिश न हो। बारिश न होने देना या आकाश को बंद कर देना ताकि बारिश न हो एलिय्याह द्वारा किए गए चमत्कारों में से एक था। लेकिन फिर आगे ध्यान दें, यह कहता है, और उनके पास पानी को खून में बदलने और जितनी बार चाहें पृथ्वी पर हर तरह की महामारी से हमला करने की शक्ति है, जो कि निर्गमन की किताब में मूसा ने निर्गमन को याद करते हुए किया था। विपत्तियाँ।

तो, इन दो गवाहों के लिए प्राथमिक मॉडल संभवतः मूसा और एलिजा के पुराने नियम के आंकड़े हैं। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि ध्यान दें कि ऐसा नहीं है कि उनमें से एक एलिय्याह के चमत्कार करता है और दूसरा मूसा के चमत्कार करता है। ये दोनों एलिय्याह और मूसा हैं।

इसलिए, जॉन को यह कहने में दिलचस्पी है कि उनमें से एक मूसा है और दूसरा एलिय्याह है। वे दोनों आकाश को बंद करने का चमत्कार करते हैं ताकि बारिश न हो। और वे दोनों जल को रक्त में बदलने और पृथ्वी पर विपत्तियाँ फैलाने में सक्षम हैं।

तो, वे दोनों मूसा और एलिय्याह के कार्य करते हैं, एक या दूसरे का नहीं। यह भी दिलचस्प है, कि उन्हें भविष्यवक्ता कहने से, एलिजा और मूसा दोनों के पास पुराने नियम में भविष्यसूचक कार्य और भविष्यसूचक मंत्रालय थे, जैसा कि ये दो गवाह यहाँ करते हैं। अब, एक बार फिर, हमें यह पूछने की ज़रूरत है कि ये गवाह कौन हैं। कुछ लोगों को यकीन हो गया है कि इस दौरान वास्तव में मूसा और एलिय्याह पुनर्जीवित हो रहे हैं।

अक्सर यह भविष्य में ईसा मसीह के आगमन से ठीक पहले के समय से जुड़ा होता है, उस अवधि के दौरान पृथ्वी पर जीवन की यह अंतिम अवधि होती है। कुछ लोगों ने वास्तव में दोनों गवाहों को पहली शताब्दी के ऐतिहासिक व्यक्तियों के साथ जोड़ने का प्रयास किया है, जिनमें एक सामान्य बात यह है कि एक पॉल था और एक पीटर था। और यह उनके मंत्रालय का वर्णन कर रहा है।

यह संभव है। लेकिन एक बार फिर, मुझे लगता है कि हमें शायद दो व्यक्तियों को प्रतीकात्मक के रूप में देखना चाहिए और शायद दो सटीक व्यक्तियों के प्रतीकात्मक के रूप में नहीं या दो सटीक व्यक्तियों के रूप में पहचाना जाना चाहिए। लेकिन कई टिप्पणियों के बाद, मैं इस बात से सहमत होऊंगा कि ये दोनों व्यक्ति संपूर्ण साक्षी चर्च के प्रतीक हैं।

इस अवधि के दौरान पूरे चर्च को देखते हुए, पहली शताब्दी से शुरू होकर ईसा मसीह के वापस आने तक। हम अध्याय 11 के अंत में और अध्याय 11 में सातवीं मुहर के साथ भी देखेंगे कि जब तक मसीह वापस नहीं आता, यह चर्च की वफादार गवाही और दुनिया में उसकी भविष्यसूचक भूमिका का एक प्रतीकात्मक दर्शन या छवि है। और फिर, हमें इन्हें दो के रूप में नहीं लेना चाहिए।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि ये दोनों गवाह चर्च का हिस्सा हैं। संभवतः, ये दो गवाह पूरे चर्च के भविष्यसूचक कार्य का प्रतीक हैं क्योंकि इसका उद्देश्य उत्पीड़न और विरोध के बावजूद दुनिया में अपनी वफादार गवाही देना है। अब, इसे समाप्त करने के कुछ कारण हैं, सबसे पहले, पद 3 में भगवान के गवाह कहलाने से, दुनिया में जाकर गवाही देने से, यह बिल्कुल वही कार्य है जो चर्च से अध्यायों में करने की अपेक्षा की गई थी 2 और 3. और इसलिए, अध्याय 2 और 3 में एक मुद्दा यह था कि चर्च, कम से कम कुछ चर्च, बुतपरस्त रोमन शासन के साथ समझौता करके अपने वफादार गवाह से समझौता कर रहे थे।

जो दो चर्च वफादार थे वे वास्तव में अपनी वफादार गवाही और समझौता करने से इनकार करने के कारण पीड़ित थे। तो, साक्षी की धारणा वह है जिससे हमें अध्याय 1 में ही परिचित कराया गया था। यीशु ने यही किया था। यीशु वफादार गवाह था।

अध्याय 3 में एंटीपास एक वफादार गवाह है जो अपने विश्वास के लिए मर जाता है। जॉन अब इन चीजों का गवाह बन रहा है जो उसने देखीं। अध्याय 2 और 3 में चर्चों का उद्देश्य विरोध और उत्पीड़न का सामना करते हुए दुनिया में यीशु मसीह के लिए एक वफादार गवाही देना है।

लेकिन समस्या यह थी कि अध्याय 2 और 3 में बहुत से चर्चों ने बुतपरस्त दुनिया के साथ इतना समझौता कर लिया था कि अगर उन्होंने पहले से ही ऐसा नहीं किया होता तो उन्हें अपनी गवाही पूरी तरह से खोने का खतरा था। ध्यान देने योग्य दूसरी बात यह है कि इस पाठ में इन दो गवाहों की पहचान पद 4 में दो दीवटों के रूप में की गई है। लेखक वास्तव में उन्हें दो जैतून के पेड़ों के रूप में पहचानने के लिए जकर्याह अध्याय 4 की भाषा का उपयोग करता है।

लेकिन उनकी पहचान जकर्याह 4 और मंदिर की दो दीवटों से भी की जाती है। चर्च पर लागू करने के लिए मंदिर की कल्पना का उपयोग करने का एक और संकेत उनके दो लैंपस्टैंड हैं। लेकिन उन्हें दो दीवटों से पहचानकर, इसे समझने की एक कुंजी श्लोक 20 में अध्याय 1 पर वापस जाना है जहां जिन दीवटों के बीच में ईसा मसीह चले थे, सुनहरे दीवटों को सात चर्चों के रूप में पहचाना गया था।

और इसलिए इन दो गवाहों की पहचान करके, और हम पूछेंगे कि एक ही क्षण में दो क्यों, लेकिन इन दो गवाहों को दो दीवटों के रूप में पहचानकर, जैसा कि हमने अब तक पद 20 में देखा है और अध्यायों में पहचान की है चर्चों के 2 और 3 को दीवट के रूप में, हमें इन दो गवाहों को पूरे चर्च के भविष्यवाणी मंत्रालय में, बल्कि उसकी गवाही में भी प्रतीक के रूप में समझना चाहिए। तो गवाही का विषय, साथ ही यह तथ्य कि जॉन ने पहले ही अध्याय 1 में चर्चों के रूप में दीवटों की पहचान कर ली है, मुझे लगता है, हमें इस निष्कर्ष पर ले जाया है कि ये दो गवाह पूरे गवाह चर्च का प्रतीक हैं। और फिर, जब वे ऐसा करते हैं, तो यह केवल भविष्य में किसी अवधि का संदर्भ नहीं दे रहा है, बल्कि मैं इसे जॉन की समझ के बारे में संदर्भित कर रहा हूँ कि चर्च को अपने समय से शुरू करके तब तक क्या करना चाहिए जब तक कि मसीह अपने संपूर्ण इतिहास में वापस न आ जाए। और अपने लोगों को इनाम और न्यायोचित ठहराता है।

इसके बीच, चर्च को शत्रुता और भयानक उत्पीड़न के बावजूद भी एक वफादार गवाह के रूप में कार्य करना चाहिए। अब, यदि यह मामला है, तो अगला प्रश्न यह है कि, नंबर दो क्यों? केवल दो गवाह ही क्यों? यदि जॉन का इरादा शाब्दिक होने का नहीं है, तो सात या दस या उस जैसी कोई संख्या क्यों नहीं? संभवतः कम से कम दो संभावनाएँ हैं, और हो सकता है कि वे विशिष्ट न हों। सबसे पहले, फिर से, पुराने नियम पर वापस जाने के लिए, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अनुसार, किसी मामले को टिके रहने के लिए, किसी गवाही को अदालत में टिके रहने के लिए, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अनुसार, दो या तीन की आवश्यकता होती है गवाह।

और इसलिए यह बिल्कुल फिट होगा। गवाह का विषय, चर्च एक गवाह है, जॉन पुराने नियम में वापस जाता है और व्यवस्थाविवरण में इस अवधारणा को खींचता है, अब व्यवस्थाविवरण में शर्त के आधार पर दो गवाहों की कल्पना करता है कि दो या तीन गवाह होने चाहिए। दूसरी संभावना यह है कि जब आप अध्याय दो और तीन पर वापस जाते हैं, तो केवल दो चर्च अपनी गवाही में वफादार थे।

और हमने देखा कि अन्य पांच कुछ हद तक समझौता कर रहे थे। केवल दो चर्चों, स्मिर्ना और फ़िलाडेल्फ़िया, को पीड़ा के बावजूद उनकी वफादार गवाही के लिए सराहना मिली। यह जॉन के लिए मॉडल भी प्रदान कर सकता है; दूसरे शब्दों में, वे दो चर्च इस बात के लिए आदर्श थे कि चर्च को दुनिया में एक समझौता न करने वाला वफादार गवाह होना चाहिए।

तो, ये दोनों मिलकर शायद समझा सकते हैं कि जॉन गवाहों को केवल दो के रूप में क्यों चित्रित करता है। इसके अलावा, जब हम यह प्रश्न पूछते हैं कि अध्याय 11 में दो गवाहों और मंदिर के बीच क्या संबंध है, छंद एक और दो, जिस मंदिर को मापा गया था, शायद ये, जैसा कि हमने जॉन को कई बार करते देखा है, ये हैं बस एक ही चीज़ को देखने के दो अलग-अलग दृष्टिकोण या दो अलग-अलग तरीके। वह चर्च संरक्षित है लेकिन उत्पीड़न के अधीन है।

चर्च एक ऐसा मंदिर है जिसे भगवान द्वारा संरक्षित किया जाता है जिसमें भगवान निवास करते हैं, लेकिन यह भी उत्पीड़न के अधीन है। अब, मैं चर्च को एक अलग दृष्टिकोण से, उसके वफादार गवाह के दृष्टिकोण से देख रहा हूँ। और दूसरे कनेक्शन पर भी गौर करें।

मंदिर से कनेक्शन और रिश्ता भी है। एक और दो में, चर्च को स्पष्ट रूप से एक मंदिर द्वारा दर्शाया गया है, लेकिन तथ्य यह है कि इसकी पहचान जकर्याह 4 के एक लैंप स्टैंड से की गई है, जो कि भगवान के मंदिर का एक दर्शन है। जकर्याह 4 पुराने नियम के अंशों में से एक है जो प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 के पीछे स्थित है, और जैतून के पेड़ों और दो दीवटों के साथ उनकी पहचान करने वाले दो गवाह मंदिर के संदर्भ में एक संबंध का सुझाव देते हैं।

इसलिए, मंदिर की कल्पना श्लोक दो में समाप्त नहीं होती है। यह जकर्याह के अध्याय 4 से लैंप स्टैंड के उपयोग द्वारा दो गवाहों के विवरण के साथ जारी है। तो, श्लोक एक और दो में, उन्हें मंदिर और चर्च के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है, और अब उन्हें श्लोक तीन में देखा जाता है और एक वफादार गवाह चर्च के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है। वे क्या करते हैं इसका एक संकेत पहले ही श्लोक तीन में मिलता है।

और इससे पहले कि वे कुछ करें, यूहन्ना उनका वर्णन टाट पहने हुए के रूप में करता है। यह पश्चाताप की धारणा का सुझाव दे सकता है लेकिन निर्णय के कारण शोक का विचार भी सुझा सकता है। इसलिए, दो गवाह पहले से ही संकेत दे रहे हैं कि यह क्या है और प्राथमिक भूमिका क्या है, कम से कम अध्याय 11 में, जो वे करने जा रहे हैं।

और वह एक संदेश या एक मंत्रालय होगा जिसका परिणाम वास्तव में निर्णय होगा। और वास्तव में, श्लोक चार और छह में यही पाया जाता है। चर्च के प्रतीक दो गवाह फिर अपना मंत्रालय शुरू

करते हैं या उन्हें साक्षी के रूप में वर्णित किया जाता है, और दिलचस्प बात यह है कि श्लोक पाँच और छह में जो होता है वह यह है कि उन्हें सुसमाचार प्रचार के मामले में सफलता नहीं मिलती है।

और ऐसा नहीं है कि वे ऐसा नहीं करते; यह बस है, यह पॉल की बात नहीं है। जॉन का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है, जैसा कि हमने कहा है, चर्च कैसा है या धर्मशास्त्रीय आधार क्या है। चर्च और उसके पीड़ित गवाह अध्याय आठ और नौ और तुरही के फैसले में जो हुआ उससे कैसे संबंधित हैं? ये अध्याय इसका अधिक विस्तार से वर्णन करते हैं। तो अब अध्याय आठ और नौ में तुरही का निर्णय चर्च के पीड़ित गवाह से संबंधित है।

यही कारण है कि भगवान ने अध्याय आठ और नौ में मानवता पर अपना फैसला सुनाया है, क्योंकि उन्होंने वफादार गवाह चर्च को अस्वीकार कर दिया है और यहां तक कि उनके उत्पीड़न और यहां तक कि वफादार चर्च को मौत के घाट उतार दिया है। तो श्लोक पाँच में ध्यान दें, यदि कोई उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है, तो उनके मुँह से आग निकलती है और उनके दुश्मनों को भस्म कर देती है। श्लोक छह, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, इन लोगों के पास आकाश को बंद करने की शक्ति है ताकि बारिश न हो।

और उनके पास पानी को रक्त में बदलने की शक्ति है, विशेषकर उसे, और पृथ्वी पर अपनी इच्छानुसार कोई भी प्लेग डालने की शक्ति है, जो अध्याय आठ और नौ तक जाती है। इसलिए यहां विचार इतना अधिक नहीं है कि हमें इनका शाब्दिक अर्थ लगाना चाहिए और यह भी कि कभी-कभी ऐसा भी समय आएगा जब बारिश नहीं होगी। लेकिन फिर से, लेखक पुराने नियम के ग्रंथों को याद कर रहा है।

वह चाहता है कि आप एलिय्याह और मूसा के मंत्रालय को याद करें और अब देखें कि अध्याय 11 में साक्षी चर्च अब एक समान भूमिका निभा रहा है। और इसलिए अध्याय आठ और नौ का निर्णय स्पष्ट रूप से पाँच और छह में इन दो गवाहों के वफादार गवाह की अस्वीकृति की प्रतिक्रिया है। अब हमने कहा कि स्पष्टतः, श्लोक चार और छह में, गवाह अपनी गवाही में निर्बाध और निर्विरोध हैं।

और यह कहता है कि जो कोई उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा वह वास्तव में विपत्तियों का शिकार होगा। अध्याय आठ और नौ. फिर भी, श्लोक सात से शुरू करके, दृश्य अचानक बदल जाता है।

सात में, ऐसा प्रतीत होता है कि गवाह खत्म हो गया है, और एक जानवर रसातल से बाहर आता है, जो उनका विरोध करने और उन्हें मौत के घाट उतारने में सक्षम है। अब, इस जानवर के बारे में कुछ बातें यहां दी गई हैं। हम देखेंगे कि एक जानवर के रसातल से बाहर आने और उन्हें मौत के घाट उतारने का यह दृश्य, जानवर के ऐसा करने का संक्षिप्त उल्लेख प्रकाशितवाक्य 12 और 13 में अधिक विस्तार से मिलेगा, जहां एक जानवर समुद्र से बाहर आता है परमेश्वर के लोगों को सताओ और हानि पहुंचाओ।

तो, अध्याय 12 और 13 श्लोक सात पर अधिक विस्तार से विस्तार करेंगे। लेकिन जानवर और रसातल के बारे में कुछ बातें हैं जिन्हें हम अध्याय 12 और 13 में अधिक विस्तार से देखेंगे। रसातल, या जानवर से शुरू करते हुए, जानवर का वास्तव में यहूदी सर्वनाश साहित्य में एक लंबा इतिहास है, लेकिन पुराने नियम में ही, जानवर एक राक्षसी आकृति है, एक दुष्ट आकृति जो अक्सर दमनकारी से जुड़ी होती है, पुराने नियम का उपयोग दमनकारी शासकों या दमनकारी राष्ट्रों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जो भगवान का विरोध करते हैं और मूर्तिपूजक हैं और भगवान के लोगों पर अत्याचार करते हैं और उन्हें नुकसान पहुंचाते हैं।

तो एक जानवर की यह छवि वह है जो जॉन के पास पहले से ही उपयोग और व्याख्या के इतिहास और दुष्ट शासकों और दुष्ट साम्राज्यों के साथ पहचान के साथ आती है जो भगवान के लोगों पर अत्याचार करते हैं और उन्हें नुकसान पहुंचाते हैं। और अब जॉन फिर से जानवर का उपयोग करता है, शायद एक और दमनकारी, ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक साम्राज्य का उल्लेख करने के लिए। और उसके दिन के लिए, वह रोमन साम्राज्य होता।

हमें पहले ही अध्याय नौ में रसातल से परिचित कराया जा चुका है, जहां ये टिड्डियों के आंकड़े रसातल से बाहर आते हैं। एबिस का अर्थ और उपयोग का एक इतिहास भी है जिसे जॉन द्वारा दिए गए उपयोग में यह अपने साथ रखता है। और वह यह है कि, जानवर को दुष्ट राक्षसी प्राणियों के घर या जेल के रूप में देखा जाता था।

तो, रसातल से बाहर आने वाले एक जानवर के बारे में पढ़कर, पाठक अब अपने उत्पीड़न के असली स्रोत को पहचानते हैं। और वह यह है कि, यह उसी आत्मा से कम नहीं है, वही ईश्वर-विरोधी भावना, वही दमनकारी, दुष्ट, राक्षसी आत्मा जिसने अन्य सरकारों और राष्ट्रों और लोगों और शासकों को ईश्वर के लोगों को नुकसान पहुंचाने और ईश्वर के लोगों का विरोध करने के लिए प्रेरित किया, अब फिर से कार्य कर रही है पहली सदी के चर्च में परमेश्वर के लोगों का विरोध करना, पहली सदी के रूप में, कम से कम रोमन साम्राज्य के रूप में। और हम इसके बारे में और अधिक देखेंगे।

हम अध्याय 12 और 13 में उस पर लौटेंगे। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि, जाहिरा तौर पर, जानवर एक जीत जीतता है, जैसा कि हमने छंद चार और छह में कहा था, दो गवाह अजेय प्रतीत होते हैं, लेकिन अब जानवर जीत जाता है जीत ताकि दोनों गवाह असुरक्षित प्रतीत हों। मुझे लगता है कि इसे देखने का तरीका यह है कि इसे इन दो गवाहों के कालानुक्रमिक विवरण या अनुक्रमिक कहानी के रूप में पढ़ना आकर्षक है।

यानी, सबसे पहले, एक समय ऐसा आएगा जब उन्हें सफलता मिलेगी और फिर वे अजेय हो जाएंगे। और फिर एक समयावधि होगी, एक संक्षिप्त अवधि जब वे वास्तव में असुरक्षित होंगे। इसके बजाय, मुझे लगता है कि जहां तक घटनाओं के अनुक्रम या अस्थायी प्रगति की बात है तो हमें इसे इतनी सख्त शाब्दिकता के साथ नहीं लेना चाहिए।

इसके बजाय, मुझे रिचर्ड बॉखम ने इस बारे में जो कहा वह पसंद आया। एक ब्रिटिश विद्वान ने कहा कि शायद अध्याय 11 को लेने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसे चर्च के जीवन में

घटनाओं की एक श्रृंखला की भविष्यवाणी के रूप में न देखा जाए, बल्कि इसे एक दृष्टांत के रूप में पढ़ा जाए कि चर्च को क्या करना चाहिए। अर्थात्, चर्च को सफलता के दौर से गुज़रने और फिर कमज़ोर होने के रूप में देखने के बजाय, इसे एक बार फिर चर्च को दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखने के रूप में पढ़ना है।

एक ओर, चर्च सुरक्षित रहेगा और यहां तक कि अजेय भी रहेगा, वहीं दूसरी ओर, यह अभी भी दुनिया के हाथों उत्पीड़न का शिकार होगा। एक ओर, यह संरक्षित और अजेय होगा। दूसरी ओर, यह अभी भी रोमन साम्राज्य और अन्य दुष्ट राष्ट्रों के हमले और उत्पीड़न के प्रति असुरक्षित है।

तो, मुझे लगता है कि बॉखम सही हो सकता है। इस प्रकार का कार्य चर्च के बारे में सच्चाई का एक दृष्टांत जैसा है। चर्च अपनी वफ़ादार गवाही कैसे बनाए रखता है? यह अपनी दुनिया कैसे चलाता है? यह अजेय होगा और अपना साक्ष्य भी देगा।

साथ ही, यह उत्पीड़न और मृत्यु के प्रति भी संवेदनशील होगा। जिन दो गवाहों को मौत की सजा दी जाती है, उनकी प्रतिक्रिया दोगुनी होती है। सबसे पहले, पाठ हमें बताता है कि वे अपने शरीर को बिना दफनाए छोड़ देते हैं।

पहली सदी में शव को न दफनाना अत्यधिक अपमान या शर्म की निशानी होती। तो, यह एक तरह से अपमान पर अपमान बढ़ता जा रहा है। इसलिए, उनके शवों को सड़कों पर छोड़ना बहुत बड़ा अपमान होता।

फिर भी, यह इतनी विचित्र बात नहीं है जितनी कि अपमान है। जिस शहर में उन्हें खुला छोड़ दिया जाता है और दफनाया नहीं जाता, उसे महान शहर कहा जाता है। दरअसल, इसे कई चीजें कहा जाता है।

सबसे पहले, इसे महान शहर कहा जाता है। एक शब्द जो कहीं और बेबीलोन पर लागू होता है, और जब हम उस शब्द को कहीं और पाते हैं, खासकर अध्याय 17 और 18 में, तो हम प्रदर्शित करेंगे कि बेबीलोन, इस मामले में, संभवतः रोम शहर के लिए एक कोड था। लेकिन प्रकाशितवाक्य के अध्याय 16, श्लोक 19, अध्याय 17, श्लोक 18, अध्याय 18, श्लोक 10, और 16, और 18, और 19, और श्लोक 21, अध्याय 18 में, हमें महान शहर का संदर्भ मिलता है। बेबीलोन का संदर्भ, जिसकी तुलना संभवतः रोम से की जाएगी।

हालाँकि, यहाँ का शहर भी यरूशलेम शहर प्रतीत होता है, क्योंकि श्लोक 8 में इसे उस स्थान के रूप में वर्णित किया गया है जहाँ हमारे प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। और इसके अलावा, इसकी पहचान सदोम और मिस्र के रूप में की जाती है। तो, जो कुछ हो रहा है वह ऐसा प्रतीत होता है मानो लेखक ईश्वर के विरोध में इन सभी शहरों को एक महान शहर में जोड़ रहा है, और जो ईश्वर के लोगों का विरोध और दमन करता है, ताकि आपके पास लगभग एक ट्रांस-टेम्पोरल शहर हो, जो अब है रोम में सन्निहित है, लेकिन मिस्र और सदोम जैसे अन्य महान शहरों में भी सन्निहित है।

और हम मिस्र की कहानी को एक दमनकारी, ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक साम्राज्य के रूप में जानते हैं, और सदोम बुराई के बराबर एक शहर है, और यहां तक कि यरूशलेम, वह स्थान जहां यीशु मसीह को मौत के घाट उतार दिया गया था और उनकी वफादार गवाही के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था, ताकि अब वे सभी रोम में सन्निहित और लिपटे हुए हैं। लेकिन यह इसे रोम से आगे किसी अन्य शहर में भी लागू करने की अनुमति देता है; यानी, यह शहर दूसरे आगमन तक अस्तित्व में है, और कोई भी अन्य शहर जो विद्रोह और बुराई और मूर्तिपूजा को मूर्त रूप देने और भगवान के लोगों पर अत्याचार करने की परवाह करता है, वह बिल्कुल वैसा ही है जैसा हम यहां पाते हैं। लेकिन अब, एक प्रतीक जो अपनी पूर्ति पाता है, विशेष रूप से रोम में, लेकिन जहां भी एक विद्रोही, मूर्तिपूजक शहर है जो भगवान को अस्वीकार करता है और अपने लोगों पर अत्याचार करता है।

एक टिप्पणी में इसे विश्व शहर का नाम दिया गया। तो, पहला यह है कि इस शहर में जिसने परमेश्वर के लोगों को सताया और मार डाला है, वे शवों को बिना दफनाए छोड़ देते हैं, अपमान और अनादर का संकेत है, शर्म का संकेत है। दूसरी चीज़ जो वे करते हैं वह है जश्र मनाना।

वे एक पार्टी रखते हैं और खुशियाँ मनाते हैं क्योंकि इन दो व्यक्तियों ने उन्हें पीड़ा और नुकसान पहुँचाया है। श्लोक 11 और 12 में वे साढ़े तीन दिन पहले मृत अवस्था में पड़े रहने का संदर्भ देते हैं, अंत में, वे पुनर्जीवित हो जाते हैं, साढ़े तीन दिन का अर्थ शायद साढ़े तीन साल दोनों को याद करने के लिए है, लेकिन शायद यह भी मोटे तौर पर वह समयावधि जब यीशु मसीह स्वयं अपने पुनरुत्थान तक कब्र में पड़े रहे। अब, ये लोग साढ़े तीन दिनों तक इन दो गवाहों के लिए सड़क पर मृत पड़े रहे, जिसके बाद श्लोक 11 और 12 तक पहुँचे, जहाँ उन्हें पूरी दुनिया के सामने उठाया गया और सभी को दिखाया गया।

यहाँ पुनरुत्थान की धारणा पुष्टिकरण में से एक है। तो अब, श्लोक 11 और 12 में, यहीं पर संतों को उनकी पीड़ा की गवाही के लिए प्रमाणित किया गया है। अध्याय 11 में पिछले छंदों में उनके बारे में दुनिया का मूल्यांकन अस्वीकृति, उत्पीड़न, मौत की सजा और उनकी मृत्यु के कारण खुशी मनाने में से एक है, और अब फैसले को एक अर्थ में उलट दिया गया है, और इन दो गवाहों को उठाया गया है और उन्हें सही ठहराया गया है देखने वाली दुनिया की आँखों के सामने।

यहां प्रतीकवाद की सर्वनाशकारी और प्रतीकात्मक प्रकृति को देखते हुए, पूरी दुनिया के लिए इन तीन गवाहों को देखने के लिए आधुनिक तरीकों का आविष्कार करने की कोई आवश्यकता नहीं है, जैसे सैटेलाइट टीवी या वेबकैम या ऐसा कुछ। इन सभी का सुझाव दिया गया है, लेकिन फिर से, लेखक सर्वनाशकारी प्रतीकवाद के साथ काम कर रहा है, और हमें खुद को याद दिलाना होगा कि जब पहले पाठकों ने इसे पढ़ा होगा तो उन्होंने क्या समझा होगा, और उन्हें हमारी कुछ आधुनिक तकनीक के बारे में कोई जानकारी नहीं होगी। तो पूरी बात यह है कि यह केवल उनकी पुष्टि का प्रतिनिधित्व करने के लिए है, और वास्तव में, इसके पीछे जो पाठ है, जब यह कहता है, साढ़े तीन दिनों तक वे सड़कों पर पड़े रहे, और लोगों ने उन्हें देखा, उन्होंने एक फेंक दिया पार्टी, फिर पद 11 में, परन्तु साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की एक सांस उनमें प्रवेश कर गई, और वे अपने पैरों पर खड़े हो गए।

यह लगभग शब्दशः है; इस पद का अधिकांश भाग यहजेकेल अध्याय 37 और पद 10 से आता है, जहां इस्राएल ने निर्वासन के कारण मृत्यु का अनुभव किया, और अब परमेश्वर एक दिन का वादा करता है जब उसकी सांस उनमें प्रवेश करेगी और वे उठ खड़े होंगे। सूखी हड्डियों का चित्र अब एक साथ आ जाता है और वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। अब, उस भाषा का उपयोग उन गवाहों पर लागू करने के लिए किया जाता है जो निर्दोष साबित हुए हैं।

जानवर ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया। दुनिया ने उन पर गर्व किया। दुनिया का फैसला यह था कि वे हार गए थे, और उनकी गवाही व्यर्थ प्रतीत हुई।

अब, परमेश्वर ने उन्हें ऊपर उठाकर और उन्हें जीवन देकर उनकी पुष्टि की है, यह दिखाते हुए कि उनकी वफादार गवाही वास्तव में व्यर्थ नहीं थी। दरअसल, मैं बाद में प्रदर्शित करूंगा कि यह पाठ प्रसिद्ध मिलेनियल किंगडम मार्ग में प्रकाशितवाक्य 20 और 4-6 में अधिक विस्तार से विकसित हुआ है। श्लोक 13 और 14 में स्वर्ग की चढ़ाई के बाद, विशेष रूप से श्लोक 13 में, हमें यह दिलचस्प दृश्य मिलता है, जहां पुनरुत्थान के बाद, अब हम एक भूकंप देखते हैं, और इस महान शहर का दसवां हिस्सा ढह जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि प्रतिक्रिया यह है कि हालांकि शहर का कम से कम दसवां हिस्सा ढह गया और शहर में रहने वाले 7,000 लोग इस भूकंप से मर गए, उनमें से बाकी लोग भयभीत थे या भयभीत थे, और उन्होंने स्वर्ग में भगवान की महिमा की। अब, इस बात पर काफी बहस हो चुकी है कि हम इस प्रतिक्रिया को कैसे समझें। अन्यत्र, इस भाषा का उपयोग कभी-कभी रूपांतरण की प्रतिक्रिया के संदर्भ में किया जाता है।

तो, कुछ लोग सुझाव देंगे कि जिन लोगों को मौत की सजा नहीं दी गई, वे वास्तव में परिवर्तित हो गए हैं। वे परमेश्वर को महिमा देते हैं। यह वही चीज़ है जिसे लोगों ने उदाहरण के लिए, तुरही के फैसले के जवाब में अध्याय 8 और 9 में करने से इनकार कर दिया था।

उन्होंने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया। उन्होंने परमेश्वर को महिमा देने से इनकार कर दिया। अब, कुछ लोग परमेश्वर को महिमा देते हैं।

अन्य लोग इसे केवल ईश्वर की संप्रभुता की जबरन स्वीकृति के रूप में समझते हैं, जैसा कि फिलिप्पियों 2, 9-11 में पाया जाता है। उदाहरण के लिए, हर घुटने को झुकने के लिए मजबूर किया जाएगा। प्रत्येक जीभ यह स्वीकार करती है कि यीशु ही प्रभु है, उनमें से कुछ मोक्ष के लिए हैं।

लेकिन कई लोग उस पाठ को एक ज़बरदस्ती दी गई श्रद्धांजलि के रूप में समझते हैं। कुछ लोग इसे केवल ईश्वर की संप्रभुता की स्वीकृति के रूप में लेंगे, जो जरूरी नहीं कि सच्चा पश्चाताप या सच्चा मोड़ हो। हालांकि, शायद हमें इसे समझना चाहिए, कि शायद हमें इसे दोनों के रूप में समझना चाहिए - और यह कि कुछ प्रतिक्रियाओं को जबरन स्वीकार किया जाएगा, लेकिन इनमें से कुछ को वास्तव में पश्चाताप के संदर्भ में भगवान को महिमा देने के रूप में समझा जाना चाहिए।

अब, रिचर्ड बॉखम समझते हैं कि ये व्यक्ति वास्तव में पश्चाताप करते हैं। ईश्वर को महिमा देना वास्तव में पश्चाताप का कार्य है, लेकिन वे चर्च के वफादार पीड़ित गवाह के जवाब में ऐसा करते हैं। दूसरे शब्दों में, रिचर्ड बाउकॉम का कहना है कि अध्याय 8 और 9 से पश्चाताप नहीं हुआ।

दूसरे शब्दों में, निर्णय पश्चाताप नहीं लाता है। क्या करता है? यह चर्च की वफादार गवाही है जो अंततः राष्ट्रों के पश्चाताप को सामने लाएगी। यहां एकमात्र कठिनाई यह है कि भगवान को महिमा देने की प्रतिक्रिया वफादार गवाह के जवाब में नहीं आती है, बल्कि यह भूकंप और अंतिम न्याय के जवाब में आती है।

इसलिए मुख्य रूप से, अंत में हमारे पास जो है वह यह है कि भगवान के फैसले के बीच में भी, कुछ लोग अभी भी पश्चाताप में प्रतिक्रिया दे रहे हैं। अब, मैं आगे जो देखना चाहता हूं वह श्लोक 15 की शुरुआत में है, अंततः अंतिम तुरही फूंकी जाने वाली है। हम सातवीं तुरही को देखकर अगला भाग शुरू करेंगे।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह प्रकाशितवाक्य 11, मंदिर और दो गवाहों पर सत्र 16 है।